International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 1, Jan.-Feb., 2024, pp: 64-66 www.ijhssm.org

स्वतंत्रता आंदोलन और संस्कृत साहित्य

- **डॉ. अमृता**
असिस्टेंट प्रोफेसर,
संस्कृत-विभाग
एस.एन.डी.टी. महिला
विश्वविद्यालय, मुंबई।

Date of Submission: 29-12-2023 Date of Acceptance: 08-01-2024

सारांश -

उन्नीसवीं सदी या स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का अनोखा समय है । सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और साहित्यिक क्षेत्रों में जितने बड़े व्यक्तित्व इस सदी में जन्मे उतने हमारे इतिहास के शायद ही किसी और दौर में जन्मे हो। संस्कृत साहित्य की परंपरा पर यह बात विशेष रूप से लागू होती है। जितने दिग्गज पंडित, शास्त्र चिंतक और विचारक इस स्वतंत्रता आंदोलन की सदी में संस्कृत के क्षेत्र में अपने विलक्षण कर्तृत्व के साथ अवतरित हुए उतने इसके पहले एक साथ किसी काल में कदाचित भारत में नहीं हुए होंगे। संस्कृत के माध्यम से स्फूर्त हुआ नवजागरण का भाव स्वातंत्र्य चेतना में ढलता गया।

की- वर्ड्स –

आंदोलन , लोकजागरण, स्वातंत्र्य, नागरिक, पुनर्जागरण, स्वराज,

जनमानस, चेतना, परतन्त्रता

भारत में अंग्रेजी सत्ता के उच्च्छेदन के लिए चला लोकमानस आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम के नाम से जाना जाता है। भारत राष्ट्र का स्वाधीनता संग्राम वैदेशिक आंग्ल सत्ता के आधिपत्य के विरोध में था । इसमें देशभक्त स्वातंत्र्यचेता वीरों ने एक ओर सशस्त्र आंदोलन का संचालन किया, वहीं दूसरी ओर अहिंसक सत्याग्रह जैसे प्रभावी आंदोलनों से मातृभूमि के स्वातंत्र्य के प्रति जन जागरूकता का परिचालन भी किया। परतन्त्रता की लंबी अवधि के पश्चात् १९ वीं एवं २० वीं सदी में सांस्कृतिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण हुए। स्वातंत्र्य समर प्रायः किसी व्यक्ति नहीं बल्कि सभी भारतीयों की जागृत आंतरिक भावना अंग्रेजी पारतन्त्र्य को भंग करने के उद्देश्य से चलाया गया था।

यह भावना जैसे देश के दूसरी भाषाओं में लिखी गई ठीक वैसे ही संस्कृत भाषा के साहित्य में भी निबद्ध की गई " इस स्वतंत्रता संघर्ष से संस्कृत साहित्य का संबंध अनेक प्रकार का है। अंग्रेजो के शासन में भारतीयों ने जिस प्रकार के पारतन्त्र्य का अनुभव किया, संस्कृत साहित्यकारों की रचनाओं में भी वैसा ही निदर्शन प्राप्त होता है। परतन्त्रता के विरोध में स्वतंत्रता के पक्ष में संस्कृतज्ञ कवियों ने अपनी लेखनी चलाई।

आनंदराम बरूवा, बालगंगाधर तिलक, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, त्र्यम्बक भण्डारकर, परशुराम नारायण, अप्पासाहेब पाटणकर आदि संस्कृत के मनीषी इस नवजागरण तथा स्वतंत्रता आंदोलन के पुरोधा बने।

१९ वीं और २० वीं शताब्दी के संस्कृत कवियों के बहुविध कृतित्व में स्वातंत्र्य की नई चेतना व्यक्त हुई। १९ वीं सदी के उत्तरार्ध में साहित्य, कला

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 1, Jan.-Feb., 2024, pp: 64-66 www.ijhssm.org

और संस्कृति के क्षेत्र में हो रहे रचनाकर्म तथा विमर्श में परिलक्षित नवजागरण का भाव युयुत्सा में रूपांतरित होने लगा। विदेशी शासन की जुए को अपने कन्धे से उतारकर अलग कर देने के लिए साहित्यकार , विचार तथा राजनिति में सक्रिय देशभक्त कमर कसने लगे। संस्कृत के पंडितों ने रूढ़ियों को तोडा। समाज के नवनिर्माण की संकल्पनाओं का स्वागत किया। संस्कृत के कवि और पण्डित विदेशी शासन के विरोध में मुखर हो उठे और स्वतन्त्रता सेनानियों के बीच उत्साह भरने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

भारत में अहिंसक स्वातन्त्र्य आंदोलन का प्रमुखता से नेतृत्व महात्मा गांधी द्वारा अनुष्ठित किया गया। महात्मा गांधी को केन्द्र में रखकर नायकत्वेन वर्णित काव्य, नाटक गद्यबद्ध जीवनचरित्र संस्कृत साहित्य में विपुलता से लिखा गया। जिसका आकलन सहज नहीं है। संस्कृत ग्रंथों में कवयित्री पंडिता क्षमाराव द्वारा १९३२ इस्वी में प्रकाशित **सत्याग्रह गीता** , **उत्तरसत्याग्रहगीता** एवं **स्वराज्यविजय**: नाम के तीन काव्य साहित्य जगत में सुविदित है। सत्याग्रह गीता में गांधी की लंदन यात्रा (गोलमेज सम्मेलन) का रोचक वर्णन है। उत्तरसत्याग्रहगीता का प्रकाशन १९४८ ईस्वी में हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से लेकर महात्मा गांधी के देवलोक जाने तक का वर्णन स्वराज्यविजय: में है। जिसका प्रकाशन १९६२ ईस्वी में हुआ।

रामानंद सम्प्रदाय के महान संत वैष्णवाचार्य स्वामी भगवदाचार्य की काल स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भगवदाचार्य स्वतंत्रता संग्राम के पूर्णतः समर्थक थे। इनके लिखे काव्यत्रय संस्कृत साहित्य में खास है। ये हैं '**भारतपारिजातम्**, **पारिजातापहारम्** और **पारिजातसौरभम्।** भगवदाचार्य ने ' भारतपारिजातम्' में महात्मा गांधी के जन्म से लेकर साबरमती आश्रम की स्थापना तक का इतिहास निबद्ध किया है। पारिजातापहारम् में भारतछोडो आंदोलन का और ' पारिजातसौरभम्' में गांधी के स्वर्गारोहण तक का वर्णन किया है। संस्कृत साहित्यकारों की सूक्ष्मदृष्टि स्वाधीनता के समर के साथ साथ चल रही थी, जिससे उनकी लेखनी ने सहस्त्रों पृष्ठ लिख डाले। इस समय के प्रमुख संस्कृत विद्वान थे विद्युतशेखर भट्टाचार्य, महादेव शास्त्री, दर्शन केसरी नारायण शास्त्रीखिस्ते, राव भट्टाचार्य और स्वामी भगवदाचार्य। इन संस्कृत पंडितों ने स्वातंत्र्य चेतना का आंतरिक समर्थन किया है। स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर ने स्वतंत्रता संघर्ष को प्रेरित करने के लिए ' **काला पानी** ' शीर्षक से एक उपन्यास लिखा। जिसमें इन्होंने स्वतंत्रता को एक देवी के रूप में संबोधित कर संस्कृत में लिखा है - ' **सन्ति स्वतंत्रते भगवति ! त्वामहं यशोयुतां वन्दे । जयोस्तुते श्री महन्मंगले शिवास्पदे शुभदे ।**'

अप्पा शास्त्री की **'पञ्जरबद्धः शुकः',** एक शोकगीत है। इसमें पिंजरे में बंद तोते को सम्बोधित करते हुए कवि ने परतन्त्र भारत की दीनता का मार्मिक चित्र अंकित किया है। प्रकारान्तर से यह कविता परतन्त्रता का धिक्कार और स्वाधीनता का वर्ण हैं। पिंजरा विदेशी शासन का प्रतीक है। इस कविता ने आंदोलनकारियों को प्रेरित करने का कार्य किया।

संस्कृत का प्रथम आधुनिकयुगीन उपन्यास पंडित अम्बिका दत्त व्यास द्वारा रचित ' **शिवराजविजयः**' है। इसमें शिवाजी महाराज द्वारा मुगल शासकों के विरोध में स्वातंत्र्य संघर्ष की कथा वस्तु है। संस्कृत भाषा में निबद्ध साहित्य में केवल गांधी ही नहीं अपितु लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सुभाष चन्द्र बोस जैसे नेताओं का गाथा गान गौरव के साथ हुआ है। पंढरीनाथ पाठक ने महात्मचरितम् और वासुदेव शास्त्री ने लोकमान्य तिलक का जीवन तिलकचरितम् लिखा। १९५६ ईस्वी में लोकमान्य तिलक के जन्म शताब्दी के अवसर पर तिलक का जीवन चरित बहुत से संस्कृत विद्वानों द्वारा लिखा गया। डॉ. श्रीधर

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 1, Jan.-Feb., 2024, pp: 64-66 www.ijhssm.org

भास्कर वर्णेकर द्वारा स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर की जीवनी ' **विनायक वैजन्ती** ' संस्कृत में लिखी गई है। सोमेश्वर व्यास ने ' **भारतीय रत्न समुच्चय** ' में स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए संघर्ष का विशद व्याख्यान किया। १९५९ ईस्वीं में प्रकाशित ' **महापुरूषकीर्तनम्** ' संस्कृत ग्रंथ में धर्मदेव विद्यावाचस्पति द्वारा राम – कृष्ण - बुद्ध – विवेकानंद से आरंभ करके तिलक – लाला लाजपत राय – विपिन चन्द्र – सुभाष चन्द्र बोस – सरदार पटेल – श्यामा मुखर्जी – अबुल कलाम आजाद – विनोबा भावे आदि स्वातन्त्र्य वीरों का पद्यबद्ध वर्णन किया गया है।

१५ अगस्त १९४७ को देश की स्वतंत्रता पर जो उल्लास छाया उसका विस्तार संस्कृत विद्वानों ने भरपूर मात्रा में अपनी लेखनी के द्वारा किया। संस्कृत पत्र पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित हुए। इसी संदर्भ में डॉ. वेंकट राघवन ने ' **स्वराज्य केतु:** ' पंडित रामकृष्ण भट्ट ने स्वातन्त्र्यज्योति: काव्यो का प्रणयन किया। ' **संस्कृतरत्नाकर:**' पत्र के अगस्त १९४७ के अंक में संपादक भट्ट मथुरा नाथ शास्त्री ने धनाक्षरी छंद में अपने उद्गार प्रकट किए।

विश्वमंडलेऽस्मिन् गुरु गौरवं भजन्ती

सेयमार्यावैजयन्ती जगन्मोलौ परित: प्रवातु।

सर्वतोऽपि पूर्व मानवीयसभ्यताया गुरूर्देशो

दत्तसभ्यतोपदेशो मंगलं दधातु।

नूनं नीतिनैपुणेन नीचैर्नमयन्ती शठान दूरं

दमयन्ती भटान् प्रेमभरात्संपृणातु ।

पूर्वपरतंत्रतामवास्यामोघमंत्रतया सर्वत:

स्वतन्त्रतया भारतविभा विभातु।।

संस्कृतरत्नाकर: के इसी अंक में देवकीनंदन ' **प्रश्नवर**' द्वारा लिखित गीति अत्यंत मनोहर है।

संस्कृत के जानेमाने मनीषी देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने १५ अगस्त १९४७ को शार्दूलविक्रिडित छंद में ' **स्वातन्त्र्यवीरान्नुम:**' कविता लिखी जो संस्कृतरत्नाकर: पत्र में छपी थी।

ये कारागृहकोष्ठिकासु निगडैर्बद्धा: स्वदेशाहवे

वृन्तित्यागपरा असूनपि निजांस्त्यक्त्वाऽमरत्वं ययु:

यैवैदेशिकपारतन्त्र्यनिगडादुन्मोचिता मातृभूस्तान्

गांधिप्रमुखान् स्वराज्यतिलकान् स्वातन्त्र्यवीरान्नुम: ।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अन्य भाषा के रचनाकारों की तरह संस्कृत साहित्य के लेखको की लेखनी ने भी अपने राष्ट्र के नागरिकों को जागरूक करने का कार्य किया। इन्होंने अपने दृश्य-श्राव्य काव्य के माध्यम से जनमानस के हृदय में राष्ट्रीय भावनाए उत्पन्न की। परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी भारतमाता को स्वतन्त्र करने के लिए इन लेखकों ने अपनी रचनाओं द्वारा लोगों के मस्तिष्क को झकझोर दिया। जिससे प्रेरित हो देश को स्वतंत्र कराने के लिए सहस्त्रो नवजवानो ने हंसते हंसते मौत को गले लगा लिया। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना को जीवंत रखने का अमूल्य कार्य संस्कृत साहित्य ने किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. त्रिपाठी राधावल्लभ, स्वतंत्रता संग्राम और संस्कृत ।
२. राजस्थान संस्कृत अकादमी ।
३. पाठक डॉ. जगन्नाथ, आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान , लखनऊ ।